सतगुरु मेरे श्याम श्यामा जी ने, खेल को ऐसा मोड़ दिया
आड़े पट को हटा कर रूहों को,मूल स्वरूप से जोड़ दिया

1-कलतक हमने नासमझी में,साहेबी आपकी न जानी
अब तक पछताते हैं क्यूंकर, हमने करी न कुर्बानी
माया की प्रवाह में बह गईं,बेनाम सी जिंदगानी
चरणों में लेकर हमको,मेहर से अपनी तोल दिया

2-प्रेम का रंग दिया हमको,धनी ने खेल में होली खेलन को
मीठा रस दिया वाणी का हमें,प्रेम की बोली बोलन को
अहम् के वस्त्र उतारे न हमने,अखंड सुखों में झीलन को
अवगुण सबके माफ किए,और धाम दरवाजा खोल ददिया

3- हमने देखा सतगुरू जी को,कलकलाते रोते हुए
याद दिलाते रूहों को घर की,अश्कों में भिगोते हुए
पल की देर न की हमने,फिर से माया में सोते हुए
विरहा रूहों को धाम का आ जाये,तन को अपने छोड़ दिया

Nijanand App